International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 04(II), October - December, 2022, pp. 37-42

यज्ञ और पर्यावरण संरक्षण

डॉ. राजेन्द्र कुमार पुरोहित*

प्रस्तावना

वेदों की सजीवता यज्ञ से ही परिलक्षित होती है और यज्ञ आयोजन से ही धरा पर पर्यावरण की परिशुद्धि होती है। यज्ञ और पर्यावरण संरक्षण के बीच अविभाज्य संबंध है। इस पृथ्वी पर यज्ञमय वातावरण में ही सर्वांगींण विकास की झलक मिलती है। हमारे प्राचीन ऋषि–मुनियों ने मानव जाति के लिए जो धर्म बताएं हैं, वे यज्ञ से ही प्रेरित है। विश्व का कल्याण यज्ञ द्वारा पर्यावरण संरक्षण से ही संभव है। यज्ञ से न केवल इस लोक में बल्कि परलोक में भी मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है।

पर्यावरण की दृष्टि से यज्ञ के महत्त्व का उल्लेख करते हुए अथर्ववेद में यज्ञ को सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को बांधने वाला नाभि स्थल बताया गया है। आश्वलायन गृह्य सूत्र में यज्ञ को संतान, पशु, ब्रह्म तेज और अन्न का वर्धन करने वाला बताया गया है। मनु स्मृति में वर्णित है कि यज्ञ में डाली गई वस्तुएं आहूति द्वारा सूर्य तक पहुंचती है, सूर्य से वर्षा होती है, वर्षा से अन्न उत्पन्न होता है, जिससे प्रजा की रक्षा होती है।

अथर्ववेद में कहा गया है कि जिस मनुष्य को गूगल औषध का उत्तम गंध प्राप्त होता है उसे रोग पीड़ित नहीं करते हैं, और आक्रोश उसे नहीं घेरता है। इसी प्रकार गोपथ ब्राह्मण उपनिषद् में यह उल्लेख है कि प्राचीन काल में महामारी फैलने पर बढ़े–बढ़े यज्ञ किये जाते थे जो भैषज्य यज्ञ कहलाते थे, जिनसे रोग दूर होते थे। अथर्ववेद के अनुसार पर्यावरण की रक्षा के लिए प्रातः और सांय काल दोनो ही समय यज्ञ करना चाहिए।

यज्ञ से निकले हुए धुंए का विश्लेषण करने पर यह पाया गया कि जलती हुई शक्कर में वायु शुद्ध करने की क्षमता पाई जाती है और इसके धुएं में क्षय, चेचक व हैजा आदि बीमारियों के कीटाणु नष्ट करने की क्षमता है। मुनक्का, किशमिश आदि फलों के धुएं में टाईफाईड के रोग कीट मारने की क्षमता है। घी, चावल में केसर मिलाकर अग्नि में आहुति देने से रोग कीट मर जाते हैं। एतादृशः यज्ञ के धुएं से दुर्गंध नष्ट हो जाते हैं, रोगवाहक कृमि कीट आदि नष्ट हो जाते हैं तथा पर्यावरण शुद्ध व स्वास्थ्यवर्धक होता है।

वैचारिक सामाजिक और भौतिक पर्यावरण में संभावित प्रदूषण को ध्यान में रखते हुए वेद में यज्ञ की व्यवस्था की गई है। यज्ञ का अर्थ कर्मकाण्डी यज्ञ के अलावा निष्काम कर्म, विचार तथा भाव आदि के रूप में है। यज्ञ त्याग का समष्टिवाचक शब्द है, परार्थ – अर्थ का त्याग यज्ञ है। ऋग्वेद के पुरुष सूक्त में देवताओं ने जिस यज्ञ का विस्तार करते हुए पुरुष रूपी पशु को बाधा, बसंत उसका घी था, ग्रीष्म लकड़ी, शरद हवनीय पदार्थ था तथा देवों ने यज्ञ से यज्ञ का यजन किया।

* सह आचार्य, इतिहास, राजकीय बागड़ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पाली, राजस्थान।

कर्मकाण्डीय यज्ञ आहूतियों से वातावरण शुद्ध होता है। यज्ञ से उत्पन्न धूम से बादल बनता है, बादल से वृष्टि होती है, वृष्टि से अन्न उत्पन्न होता है, अन्न से प्रजा उत्पन्न होती है, प्रजा यज्ञ करती है, यह त्याग और प्राप्ति की प्राकृतिक व्यवस्था है। श्रीमद्भगवत् गीता के तृतीय अध्याय में इस चक्र का उल्लेख करते हुए इसके पालन में जीवन की सार्थकता को बताया।

वास्तव में यज्ञ प्राकृतिक क्रिया के संतुलन की प्रक्रिया है। वैज्ञानिकों ने इस तथ्य को स्वीकार किया है कि यज्ञ के माध्यम से वातावरण के कार्बन–डाई–ऑक्साइड और ऑक्सीजन का संतुलन स्थापित किया जा सकता है। जिस प्रकार कर्मकाण्डी यज्ञ प्राकृतिक चक्र तथा वातावरण शुद्धि के लिए आवश्यक है उसी प्रकार श्रमात्मक, भावनात्मक यज्ञ अन्तःशुद्धि के लिए आवश्यक है।

अथर्ववेद में कहा गया है कि – यज्ञ की अग्नि विविध कष्टों को दूर करने वाली महान औषधि है। यज्ञ में सामाजिक एवं मानसिक प्रदूषण का भी समाधान बताया गया है। अग्नि में आहूतियां अर्पित करना ही यज्ञ नहीं है बल्कि यज्ञ एक ऐसी भावना है जो समस्त पर्यावरण को प्रभावित करती है और सुवासित करती है। वायुमण्डल में विद्यमान वायु को शुद्ध करने के लिए यज्ञ का बहुत योगदान है।

प्रकृति में एक नैसर्गिक चक्र की व्यवस्था है, जिसके अनुसार प्रत्येक पदार्थ पुनः अपने मूल स्थान पर पहुंचता है, इसलिए ऋतु चक्र, वर्ष चक्र और सौर चक्र की नियोजना की गई है। इसी प्राकृतिक चक्र का नाम यज्ञ है, यह प्राकृतिक यज्ञ पूरे विश्व में चलता है। ऋग्वेद में वर्ष चक्र रूपी यज्ञ में वसंत ऋतु घी, ग्रीष्म ऋतु समिधा और शरद् हव्य कहा गया है। वसंत के बाद ग्रीष्म, ग्रीष्म के बाद वर्षा, वर्षा के बाद शरद् और शरद् के बाद वसंत आते हैं। ऋग्वेद में आगे कहा गया है कि यज्ञ से द्युलोक प्रसन्न किया जाता है, द्युलोक वर्षा द्वारा पृथ्वी को तृप्त करता है, यज्ञ से मेघ बनते हैं और मेघ से वर्षा होती है। अथर्ववेद में वर्णित है कि यज्ञ में प्रयुक्त गुग्गुल, पीपल आदि दृव्यों से यक्ष्मा रोग का निवारण होता है जो स्वास्थ्य को कमजोर करता है।

वैज्ञानिक परीक्षणों से यह सिद्ध हो चुका है कि अग्निहोत्र से कुछ ऐसी गैसे निकलती है जो वातावरण को शुद्ध करती है। ये गैसें एथिनीन ऑक्साइड् व प्रोपेलीन है। गोपथ ब्राह्मण और कौषीतकि ब्राह्मण में भैषज्य यज्ञों का उल्लेख है।

वैदिक संस्कृति में विभिन्न यागो और अग्निहोत्रों का उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण ही है, जो सर्वश्रेष्ठ और सहज उपाय है। ऋग्वेद में वर्णित है कि यज्ञ से आयु, प्राण, ज्योति, आकाश सभी शुद्ध होते है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने लिखा है कि – होम करने से पवन और वर्षा जल की शुद्धि से पृथ्वी के सभी पदार्थों की जो अत्यन्त उत्तमता होती है, उसी से सब जीवों को परम सुख होता है और ईश्वर उन पर कृपा करता है।

यज्ञ की महत्ता पर शत्पथ ब्राह्मण का कहना है कि – यज्ञ श्रेष्ठतम् कर्म है। इसी ब्राह्मण ग्रन्थ में वर्णित है कि अग्निहोत्र द्वारा सम्पूर्ण विश्व का कल्याण होता है और यज्ञ विविध सुखों से परिपूर्ण करता है। वायु प्रदूषण नाईट्रोजन ऑक्साइड, हाईड्रॉ कार्बन, कार्बनमोनो ऑक्साइड जैसे पदार्थों के कारण होता है। इस प्रकार के प्रदूषण से बचने के लिए शुक्ल यजुर्वेद में यज्ञ की नियोजना का उल्लेख मिलता है। पंचविध वायु (प्राण, अपान, व्यान, संमान और उद्दान) पंचविध वायु की शुद्धि के लिए स्तुति, स्तवन और यज्ञ आति के मंत्र शुक्ल यजुर्वेद में मिलते है जिनसे सभी प्राणियों का हित होता है।

पौराणिक साहित्य के मनीषियों का विचार हैं कि इस जगत की समस्त गतिविधियों का मूल केंद्र यज्ञ है। प्रत्येक वस्तु अन्य वस्तु में विलीन होकर उसे सुदृढ़ करती हैं; अतः जो जिसमें आहूत होनी चाहिए, उसकी व्यवस्था मनुष्यों द्वारा की जानी चाहिए, यही प्राकृतिक नियम हैं, जिसे खण्डित न किया जाए।

वैदिक ऋषियों एवं मनीषियों द्वारा यज्ञ की इस प्राचीन और प्राकृतिक व्यवस्था की रक्षा का उल्लेख ऋग्वेद एंव यजुर्वेद दोनों मिलता हैं कि देवताओं ने यज्ञ से यज्ञ किया तो उनका प्रथम धर्म था। वे इसी कार्य में उस महान् स्वर्ग को गए जहाँ पूर्व काल के वेदर्षि गए थे।

मंत्र में यज्ञ से तात्पर्य हैं कि स्थावर–जंगम की अन्योन्याश्रित क्रियाओं के उपक्रम के अनुकूल कार्य करना तथा स्वर्ग से यही आशय हैं–अनुकूल रमणीय परिस्थितियाँ, जिनमें प्रकृति ने सभी सुविधाएँ प्रदान कर रखी हों। अतः मनुष्य को चाहिए कि इस पर्यावरण में जो परस्पर चक्र बना हुआ हैं उसी को पुष्ट करें। उसकी रक्षा करें जिससे पर्यावरण सुदृढ़ बना रहे और मानव को स्वर्ग सी सुविधाएँ और सुख प्राप्त होते रहे। पर्यावरण की सुरक्षा यज्ञ में निहित हैं और यज्ञ की सुरक्षा उसके निरन्तर क्रियान्वयन में विद्यमान है ऋतु सम्बन्धी जितने भी यज्ञ हैं, उनको विधिवत् किया जाना चाहिए।

मत्स्य पुराण में यज्ञ का लक्षण प्रकट करते हुए कहा गया हैं कि जिस कर्म विशेष में देवता, हवनीय द्रव्य, वेद मंत्र, ऋत्विज और दक्षिणा; इन पाँचों का संयोग हो, वह यज्ञ है। वैदिक संस्कृति के व्यापक फलक में जीवन, जीवन शुद्धि, दीर्घायु तथा जीवन की समस्त एषणाओं को यज्ञ के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है। कहने का तात्पर्य यह हैं कि यज्ञ से ही आयु, देवीय सम्पदा, चक्षु, श्रोत्र और प्राण आदि उद्भूत है।

स्वामी दयानंद सरस्वती सत्यार्थप्रकाश में स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश में भी लिखते है कि यज्ञ उसको कहते है कि जिसमें विद्वानों का सत्कार, यथायोग्य शिल्प अर्थात् रसायन जो कि पदार्थ विद्या उससे उपयोग और विद्यादि शुभ गणों का दान, अग्निहोत्रादि जिनसे वायु, वृष्टि, जल, औषधि की पवित्रता करके सब जीवों को सुख पहुँचाना, उसको उत्तम समझता हूँ। यज्ञ केवल अग्निहोम नहीं हैं बल्कि यह व्यक्ति विशेष से लेकर सामाजिक स्तर तक एक विलक्षण क्रिया हैं जो शारीरिक, मानसिक, आर्थिक और आध्यात्मिक पहलुओं का प्रतीक है।

वैदिक साहित्य में वेद और यज्ञ का संबंध मुख्य रूप से शरीर और प्राण की भाँति ज्ञात है। वेद एक देह रूप हैं तो यज्ञ उसका प्राण है। ऋग्वेद के दशम मण्डल के पुरुष सूक्त में समूची सृष्टि प्रक्रिया को यज्ञ के रूप में देखा गया है। मूल रूप से यज्ञ का यह रूप इतना लोक प्रचलित हुआ कि पुरुष सूक्त का वाचन देव पूजा आदि कार्यों में मुख्य रूप से किया जाता हैं जो पर्यावरण रक्षा का एक मुख्य भाग है।

यर्जुवेद यज्ञ संबंधी कर्मकाण्ड का वेद हैं और आचार्य सायण ने इसे भित्ति (दीवार) के रूप में जाना है। शतपथ ब्राह्मण में वर्णित हैं कि प्रजापति ने अपनी प्रतिमा के रूप में सर्वप्रथम यज्ञ को उत्पन्न किया।

मानव जीवन में यज्ञ से हर चरण पर घनिष्ठ संबंध है। श्रीमद्भागवत् गीता में योगेश्वर भगवान श्री कृष्ण ने यज्ञ को सर्वोच्च रूप में बताया है।

समस्त जड़ और चेतन द्वारा परस्पर एक दूसरे को देना और पूर्णता प्रदान करना यज्ञ है।

आचार्य कुमारिल भट्ट और शाबर स्वामी ने अपने मींमासा सूत्र में कहा हैं कि यज्ञ परक अर्थ के रूप में यह स्वयं सिद्ध हैं कि चारों वेद यज्ञ के चारों सींग है। प्रातः, मध्याह्न, अपराह्न ये तीन यज्ञकाल, यज्ञ के तीन पैर है। प्रवर्ग्य (उष्ण घी में दूध डालकर बनाया गया यज्ञीय द्रव्य) और ब्रह्मोदन (यज्ञ के समय प्रमुख ऋत्विजों के लिए दक्षिणाग्नि पर पकाया गया भात) ये दो यज्ञ के सिर हैं। इसी प्रकार गायत्री, उष्णिक अनुष्टुप्, बृहति, पंक्ति, त्रिष्टुप व जगति ये सात वैदिक छन्द हैं, यज्ञ के सात हाथ हैं तथा ऋक्, यजुष् व साम के मंत्रों द्वारा यह यज्ञ उद्घोषित हो रहा है। ऐसा यह महान यज्ञदेव यज्ञ के लिए मानवों में प्रविष्ट हुआ।

भगवतगीता में यज्ञ की महत्ता बताते हुए कहा गया हैं कि यज्ञ से बादल बनते हैं, बादलों से अन्न का निर्माण होता हैं और अन्न से प्राणी जीवित रहते है। यर्जुवेद का यह मानना हैं कि सम्पूर्ण धरती यज्ञ का वेदी स्वरूप हैं ओर इसमें होने वाले यज्ञ ही सम्पूर्ण विश्व को धारण करते है।

छान्दोग्योपनिषद में लिखा हैं कि मनुष्य का जीवन एक यज्ञ है। वैदिक यज्ञों में यज्ञ द्वारा बाह्य और आन्तरिक तत्त्वों का संतुलन दर्शाया गया है। इनमें प्रत्यक्ष रूप से पर्यावरणीय कारकों को पुष्ट करने की बात मिलती है।

इन पर्यावरणीय कारकों को कोई किसी भी प्रकार की हानि न पहुँचाए एवं इन मूल स्त्रोतो को नष्ट न करे। यदि कोई विलासिता के लिए ऐसा कर रहा हैं तो उसका अपराध अक्षम्य है।

यजुर्वेद में यज्ञ अग्नि को जल बरसाने वाला ज्वाला रूप धन से युक्त और पुष्टि बढ़ाने वाला कहा गया है। उसे वर्षा करने वाली यज्ञ अग्नि बताकर रोगों से लड़ने की प्रतिरोधक शक्ति की बात कही गयी है।

वायुमण्डल की परिशुद्धि के लिए यज्ञ उपचार से बढ़कर और कोई शक्तिशाली माध्यम अब तक नहीं ढूढ़ा जा सका है। इसी तरह वातावरण के परिशोधन के लिए गायत्री की व्यक्तिगत और सामूहिक साधनाए अत्याधिक कारगर सिद्ध हुई है।

अभी हाल में ही शांति कुंज गायत्री परिवार द्वारा गुना(मध्यप्रदेश) में अश्वमेध यज्ञ करवाया गया जिसके आँकड़ों को कृषि के लिए उपयोगी बताया गया जो पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से काफी महत्त्वपूर्ण है। गोरखपुर यज्ञ में वहाँ के वैज्ञानिकों ने उत्तरप्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड से उपकरण लेकर यज्ञ का अध्ययन किया और इस नतीजे पर पहुँचे कि यज्ञ कैन्सर जैसी जानलेवा और प्रदूषण जन्य कष्टप्रद बीमारियों को रोकने में सक्षम है। इससे यह निष्कर्ष निकला कि यज्ञ से पूर्व सल्फर डाई ऑक्साइड का अनुपात 3.36 से घटकर यज्ञ अवधि में 2.82 व यज्ञ के पश्चात 0.80 हो गया। इसी प्रकार नाइट्रस ऑक्साइड का अनुपात यज्ञ से पूर्व 1.16 था जो यज्ञ अवधि में 1.14 और यज्ञ के बाद 1.02 हो गया।

इसी प्रकार जल में बैक्टीरिया यज्ञ से पूर्व 4500, यज्ञ अवधि में 2470 और यज्ञ के पश्चात 1250 हो गये, विभिन्न यज्ञ कुण्डों से प्राप्त यज्ञ भस्म प्रयोगशाला में रासायनिक विश्लेषण करने पर विविध प्रकार के खनिज पाये जाने का उल्लेख मिलता है। जो निम्न सारणी से स्पष्ट है –

क्र.सं.	खनिज का नाम	रासायनिक विश्लेषण
1	फास्फोरस	4076 मि.ग्रा/कि.ग्रा.
2	पोटेशियम	3407 मि.ग्रा/कि.ग्रा.
3	कैल्शियम	7822 मि.ग्रा/कि.ग्रा.
4	मैग्निशियम	6424 मि.ग्रा/कि.ग्रा.
5	नाइट्रोजन	32 मि.ग्रा/कि.ग्रा.
6	क्वाइस्पार	2 प्रतिशत डब्लू.डब्लू.

निष्कर्ष

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि वैदिक वाङ्मय के व्यापक फलक में सृष्टि प्रक्रिया में पर्यावरण संरक्षण के प्रतीक यज्ञों का सविस्तार, सप्रमाण, गवेषण और विश्लेषण किया जा सकता है। गहराई से विचार किया जावे तो माता के गर्भ से लेकर अंतिम संस्कार तक मानव के साथ यज्ञ का अटूट संबंध होता हैं जिससे की पर्यावरण की पावनता झलकती है। यज्ञ कर्मों के आयोजन से ही सृष्टि प्रक्रिया और पर्यावरण की प्रगाढ़ता बनी रहती है। आज की आधुनिकतम चिकित्सा प्रणाली में अनेक रोगों की चिकित्सा यज्ञ की स्वरलहरियों के माध्यम से की जा रही है। यज्ञ प्रकृति का सर्वतः प्रहरी हैं, जो लोग प्रकृति की पवित्रता और परिशुद्धता के प्रतीक यज्ञ का उचित रूप से संपादन नहीं करते हैं वे हमेशा रोग और प्रदूषण से घिरे रहते हैं। मधुसूदन श्री कृष्ण ने स्वयं को अवतार रूप और प्रकृति संरक्षक के रूप में प्रकट होकर समुची प्रजा को अग्निहोत्र के माध्यम से मनोवांछित फल की कामना प्रस्तुत की है। यज्ञ से समग्र रूप से हम हमारे प्रदूषित होते हुए पर्यावरण पक्ष पर विजय प्राप्त कर सकते है। निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता हैं कि इस सृष्टि प्रक्रिया में पर्यावरण संरक्षण के प्रतीक यज्ञ समूचे चराचर जगत् के लिए वरदान सिद्ध हुए। सृष्टि प्रक्रिया के पड़ाव से यज्ञ और पर्यावरण पक्ष को शोधात्मक दृष्टि से व्याख्यायित करने का प्रयास किया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. दत्त, अजय कुमार : पर्यावरण संरक्षण में वैदिक यज्ञ की प्रासंगिकता, (वैदिक वाड्.मय एक विमर्श), संपादक डॉ. कृष्णचन्द्र चौरसिया राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2012,पृ. 291
2. अथर्ववेद 9/10/14
3. वही, पृ. 291

4. (आश्वलायन गृहय सूत्र 1/10/12

5. अग्ने प्रस्ताहुतिः सम्यगादित्यभुयपतिष्ठते। आदित्याज्जायते दृष्टिरेन्न ततः प्रजाः। –

6. अथर्ववेद – 19/38/1

7. गोपथ ब्रा. उपनिषद् – 19/55/03

8. तिवारी, डॉ. राम परसन : ''पर्यावरण प्रदूषण के निवारण में वैदिक साहित्य की संचेतना'' (वैदिक वाड्.मय एक विमर्श) संपादक डॉ. कृष्णचन्द्र चौरसिया राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2012, पृ. 239

9. वही

10. अग्ने शरीरमसि पारयिष्णु, रक्षो हासि सपत्नहा। अथो अमीवचातनः पूतद्रुर्माम भेषजम्।। – अथर्ववेद – 8.2.28

11. पाण्डेय, डॉ. चन्द्रेश कुमार : ''पर्यावरणीय संचेतना – वैदिक साहित्य की दृष्टि में'' (वैदिक वाड्.मय एक विमर्श), संपादक डॉ. कृष्णचन्द्र चौरसिया राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2012, पृ. 322

12. पाण्डेय, डॉ. चन्द्रेश कुमार : ''पर्यावरणीय संचेतना – वैदिक साहित्य की दृष्टि में'' (वैदिक वाड्.मय एक विमर्श), संपादक डॉ. कृष्णचन्द्र चौरसिया राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2012, पृ. 322

13. यत्पुरूषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।। – ऋग्वेद – 10–90–6 भूमिं पर्जन्या जिन्वति दिवं जिन्वत्यग्नयः। – ऋग्वेद 1.164.51

14. न तं यक्ष्मा अरून्धते, नैनं शपथे अश्नुते। यं भेषजस्य गुग्गुलों, सुरभिगन्धो अश्नुते।। – अथर्ववेद – 17.381

15. पाण्डेय, डॉ. चन्द्रेश कुमार : ''पर्यावरणीय संचेतना – वैदिक साहित्य की दृष्टि में'' (वैदिक वाड्.मय एक विमर्श) संपादक डॉ. कृष्णचन्द्र चौरसिया राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2012, पृ. 323

16. गोपथ ब्राह्मण (2, 1.19)

17. कौषीतकि ब्रा. (5.1)

18. आयुर्यज्ञेन कल्पतां प्राणो यज्ञेन कल्पतां चक्षुर्यज्ञेन कल्पनां श्रोत्रं यज्ञेन कल्पतां पृष्ठं यज्ञेन कल्पतां यज्ञो यज्ञेन कल्पताम्। प्रजापतेः प्रजा अभूम स्वर्देवा अगन्मामृता अभूम्–ऋग्वेद 9.21

19. सरस्वती, स्वामी दयानन्द – ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका

20. मिश्र, डॉ. योगेन्द्र : शुक्लयजुर्वेद में पर्यावरण ज्ञान – (वैदिक वाड्.मय एक विमर्श) संपादक डॉ. कृष्णचन्द्र चौरसिया राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2012, पृ. 306

21. यज्ञो वै श्रेष्ठतम् कर्म – शत. ब्रा. – 1.7.4.5

22. सुत्रामाणं पृथ्वीं द्याम नेहसं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम्। दैवीं नावं स्वरित्रामनागसमस्रवन्तीमारूहैमा स्वस्तये – श.ब्रा. 21.6

23. मिश्र, डॉ. योगेन्द्र : शुक्लयजुर्वेद में पर्यावरण ज्ञान – (वैदिक वाड्.मय एक विमर्श) संपादक डॉ. कृष्णचन्द्र चौरसिया राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2012, पृ. 306

24. 'प्राषाय स्वाहाऽपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा' एवं 'वाताय स्वाहा धूमाय स्वाहाऽभ्राय स्वाह मेंघाय स्वाहा' – शुक्लयजुर्वेद 22.26

25. श्रीवास्तव, अंजलि : पुराणों में पर्यावरण शिक्षा, अनुभव पब्लिशिंग हाऊस, इलाहबाद, 2009, पृ. 100

26. ''यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।

27. ते न नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे सांध्या सन्ति देवाः।।'–ऋ.–10,90,16 यजु. 31,16 मत्स्य पुराण–144.44

28. शास्त्री, डॉ. शंकरलाल : संस्कृत वाड्मय में पर्यावरण, हंसा प्रकाशन,जयपुर, 2009, पृ.70
29. नवनीत, कुमार संजय, प्रभात, त्रिपाठी शालिनी : यज्ञ चिकित्सा, स्वामी श्रृद्धानन्द प्रकाशन, स्वामी श्रृद्धानन्द एजुकेशनल व वेलफेयर सोसायटी, हरिद्वार, 2008, पृ. 2
30. भित्तिस्थानीयो यजुर्वेदश्चित्रस्थनीयावितरो – आचार्य सायण
31. शास्त्री डॉ. शंकरलाल–संस्कृत वाड्मय में पर्यावरण, हंसा प्रकाशन, जयपुर, पृ. 72
32. अथैन मात्मनः प्रतिमामसृजत यद्यज्ञम् तस्मादाहुः प्रजापतिर्यज्ञ इत्यात्मनो ह्वोनं प्रतिमामसृजत। (शतपथ ब्राह्मण 11/1/813)
33. यज्ञदानतपः कर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत्। यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम्।। –(श्री मदभागवत गीता 18/5)
34. श्रीवास्तव, अंजलि : पुराणों में पर्यावरण शिक्षा, अनुभव पब्लिशिंग हाऊस, इलाहबाद, 2009, पृ. 101
35. शास्त्री, डॉ. शंकरलाल : संस्कृत वाड्मय में पर्यावरण, हंसा प्रकाशन, जयपुर, 2009, पृ. 73
36. ऋग्वेद–3.14
37. सिंघवी, डॉ. नंदिता : वेदों में पर्यावरण संरक्षण, देवनागर प्रकाशन, जयपुर, 2008, पृ. 56
38. यजुर्वेद– 23.62
39. पुरूषो वाव यज्ञ–छान्दोग्योपनिषद 3,14
40. अयमग्निर्गृहपतिर्गार्हपत्यः प्रजाय वसुवित्तमः।
41. अग्ने गृहपतेऽभि द्युम्नमभि सह आ यच्छस्व।।
42. अयमग्निः पुरीष्यो रयिमान् पुष्टिवर्द्धनः।
43. अग्ने पुरीष्याभि द्युम्नमभि सह आ यच्छस्व।। –यजुर्वेद 3/39–40
44. कपूर, डॉ. बी.बी.एस : भारतीय संस्कृति, धर्म एवं पर्यावरण संरक्षण, पृ. 80–81
45. कपूर, डॉ. बी.बी.एस. : भारतीय संस्कृति, धर्म एवं पर्यावरण संरक्षण, मधु पब्लिकेशन्स, 2001, पृ. 81
46. डॉ. आशालता पाण्डेय अपने शोध लेख ''यज्ञ, सृष्टि और आयु'' यज्ञ और आयुर्विज्ञान पृ. 292

❖◆❖